

# Makar Sankranti Puja

Date : 15th January 2005  
Place : Pune  
Type : Puja  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	01 - 01
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

आज का दिन पृथ्वी में उत्तर भाग में महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि सूर्य दक्षिण से उत्तर में आता है। इसलिये नहीं कि ये हम कर रहे हैं। हर साल एक ही तारीख जो कि सूर्य के ऊपर ..... तो हम लोग इसको क्यों इतना मानते हैं? क्या विशेष बात है कि सूर्य उत्तर में आ गया। तो हम लोगों को उसमें इतनी खुशी क्यों? बात ये है कि सूर्य से ही हमारे सब कार्य जो हैं प्रणीत होते हैं। अंधेरे में, रात्रि में हम लोग निद्रावस्था में रहते हैं। लेकिन जब सूर्य उदित होता है, उसके बाद ही हमारे सारे कार्य चलते हैं। इसलिये इस कार्य को प्रभावित करने वाली जो चीज़ है वो है सूर्य। और वो हमारे कक्ष में आ जाती है, तो हम इसको बहुत मान्य करते हैं। सबसे बड़ी बात तो ये है कि बाकी सारे त्यौहार चंद्रमा पर आधारित हैं और सिर्फ यही एक त्यौहार ऐसा है, कि जो हम सूर्य के आधार करते हैं। ऐसे हमारे यहाँ सूर्यनारायण की भी बहुत महती है और लोग सूर्यनारायण को मानते हुये गंगाजी पर स्नान करने आते हैं और अनेक तरह के अनुष्ठान करते हैं। पर सब से महत्वपूर्ण यही एक चीज़ है।

अब हम लोगों को ये तय करना पड़ता है, कि इस दिन क्या करना चाहिये? इस विशेष दिन को क्या कार्य करना चाहिये? सूर्य का नमस्कार वगैरा, सूर्य को अर्घ्य दे दिया और सूर्य के प्रति अपनी कृतज्ञता हम लोगों ने संबोधित की। किंतु क्या विशेष अब कर सकते हैं? विशेष क्या कर सकते हैं? आज्ञा चक्र पे ही सूर्य का स्थान है, आप लोग जानते हैं। और आज्ञा चक्र से आप हर एक चीज़ को सोचते हैं। तो आज्ञा चक्र को ठीक करना बहुत जरूरी है। क्योंकि सूर्य को प्रभावित करता है। इसलिये आज्ञा का जो महत्व है वो ये है, कि आज्ञा पर हमारे जो हमारे ग्रह हैं, उसके अनुसार हम लोग आज्ञा चक्र से लोगों पर क्रोधित होते हैं और उनके साथ हमारा व्यवहार बिगड़ जाता है। गुस्सा आता है और हर तरह की आस्थायें मिटती जाती हैं। आज्ञा बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसको हमें समझना चाहिये कि इस पर ईसामसीह का स्थान है। और ईसामसीह ने एक ही चीज़ बताई थी कि सब को क्षमा करना चाहिये।

क्षमा करना बहुत जरूरी चीज़ है। और वो कैसे किया जाये? ..... पर होता नहीं। क्षमा के लिये जरूरी है कि संतोष अन्दर आना चाहिये और ये सोचना चाहिये कि इसे अगर परमात्मा बोलेगा तो हमको क्या करना है। इसने जो कहा था वो इसके समान होगा। हमको इसमें क्यों पड़ना है? इस तरह से निरिच्छता आ जाये और आप क्षमा कर दे सब को, तो आज्ञा चक्र ठीक हो जाये। आज्ञा चक्र ठीक होने से जो बहुत बड़ी रुकावट हमारे उत्थान में है, जो कुण्डलिनी को रोकती है, वो है आज्ञा, और इसके लिये हमें क्षमा करना आना चाहिये। हर समय हम सोचते रहते हैं कि किसने क्या दुःख दिया? किसने क्या तकलीफ दी? उसकी जगह ये सोचना चाहिये कि हमें क्षमा कर दें। इसको उसको हमने क्षमा कर दिया और क्षमा करने से एकदम से आपको ... कि कुण्डलिनी झट से उपर चढ़ जायेगी। इसके लिये हमें जरूरी है कि आज्ञा को साफ़ रखें। गुस्सा आना मनुष्य का स्वभाव है। परमात्मा का नहीं। मनुष्य का स्वभाव है। इसलिये उस गुस्से को रोकना चाहिये। और उसकी जगह क्षमा, क्षमा ऐसे तीन बार कहने से आज्ञा चक्र ठीक हो जाता है। सब को अनंत आशीर्वाद!